मासिक पशुपालन निर्देशिका

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

मार्च, 2023 क्रमांक 03

लुवास द्वारा स्थापित पशु रोग जाँच प्रयोगशालाओं नेटवर्क

पशु पालन में पशु रोगों की जल्द व सटीक जांच बहुत अहम है। समय रहते पशु रोगों की जांच से पशुपालक ऐसे रोगों से संभावित नुकसान से बच सकते हैं। पशुपालकों की सेवा में लुवास विश्वविद्यालय द्वारा हरियाणा के विभिन्न जिलों में पशु रोग जांच प्रयोगशालाओं का नेटवर्क स्थापित किया गया है। इन प्रयोगशालाओं में पशुपालक पशुओं की स्वास्थ्य संबंधी जांच जैसे की दूध, खून, गोबर, पेशाब इत्यादि की जॉच करवा सकते हैं। किसी भी रोग की जॉच हेतु पशुपालक पशुओं के सैंपल आदि लेने से पहले अपने नज़दीकी पशु चिकित्सक से संपर्क अवश्य करें। लुवास विश्वविद्यालय की पशु रोग प्रयोगशालाओं की सूची इस प्रकार है:

1.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, हिसार (लुवास)
2.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, अंबाला
3.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, जींद
4.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, भिवानी
5.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, सिरसा
6.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, रोहतक
7.पशु रोग जाँच प्रयोगशाला, नारनौल

इसके अलावा लुवास विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र जैसे कि हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र, उचानी, करनाल व रेवासा, महेंद्रगढ़ के माध्यम से विश्वविद्यालय अपनी सेवाएं दे रहा है। अतः पशुपालक अपने नजदीकी प्रयोगशाला में जाकर इन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

डॉ० नरेश जिंदल
अनुसंधान निदेशक, लुवास

मार्च मास के पशुपालन सम्बन्धी कार्य

- बरसात होने पर ठण्ड का प्रबंधन करें |
- दिन रात के तापमान के अंतर से पशुओं का बचाव करें।
- बाह्य परजीवी से होने वाले रोग (सर्रा इत्यादि) से बचाव हेतु बाह्य परजीवी नियंत्रण करें ।
- सर्रा रोग के लक्षण (अंधापन, तेज बुखार, पागलपन आदि) का ध्यान रखें ।
- मुंह खुर, गलघोंटू के बचाव का टीकाकरण पशु चिकित्सक के परामर्श से करें ।
- पशुओं में सही पाचन हेतु स्वच्छ पानी की उपलब्धता सदैव बनाएं रखे ।

पशु आहार में नयी तूड़ी प्रबंधन

- फसल कटाई के बाद आने वाली नई तूड़ी को पशुओ के आहार में एक दम से ना शुरू करे|
- शुरुआत में पुरानी तूड़ी को बचा कर रखे व नई तूड़ी के साथ मिला कर दे|
- कम्बाइन से कटने वाली फसल की तूड़ी में मिट्टी की मात्रा अधिक हो सकती हैं, जो पशुओ में पाचन संबंधी समस्या कर सकती हैं, बचाव हेतू तूड़ी छान कर दें|
- नई तूड़ी को अधिक पाच्य बनाने हेतु, तुड़ी को 4-6 घंटे तक भिगोने पश्चात खिला सकते हैं|
- पशु आहार में कोई भी बदलाव एकदम से ना करे अपितु 7-10 दिनों में धीरे धीरे बदलाव करे|
- सूखे चारे को हरे चारे के साथ मिला कर खिलाने से वह अधिक पचने योग्य बन जाता हैं|
- सूखी तूड़ी में लोहे इत्यादि से बचाव हेतु चुम्बक का उपयोग करे व तुड़ी अच्छे से छान कर ही खिलाये|
- पशुओ में बंधे व अपाचन से बचने के लिए पशु को सेंधा नमक, हरड, हींग का सेवन चिकित्सीय परामर्श से दें |

संपादक : डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सुजोय खन्ना, डॉ ज्योति शुन्ठवाल